सुनोगी मेरी कहानी?

(तेलंगाना आंदोलन की भागीदार की आत्मकथा)

दासी का जीवन

मेरा नाम कमलम्मा है। मेरा गांव मैनाला है। हमारा परिवार दासों का है। पहले मेरी मां और नानी भी ज़मीदारों के घर में दासी थी। उनमें से किसी की शादी नहीं हुई। दासियों की शादियां नहीं होती थीं। ज़मीदार घर का कोई आदमी उन्हें रख लेता था। बच्चे भी हो जाते। बहुत पुराने समय में जब बड़ा दुख पड़ा तो मेरी नानी को एक माप धान और एक रुपए के लिए ब्राह्मण परिवार को बेच दिया था। तभी से उसके बच्चे और बच्चों के बच्चे भी वहीं दास बनते चले गए।

मेरी मां को ज़मीदारों के एक चचेरे भाई ने रख लिया था। मेरे पिता भले आदमी थे। उन्होंने हम सबका खर्चा उठाया। हम सब वहीं काम करते रहे। घर की मालकिन चाहती थी कि मुझे अपनी बेटी की ससुराल में दासी बना दे, पर मेरे पिता ने नहीं भेजने दिया। मेरी शादी भी एक दास से हुई। मेरी सास भी दासी थी।

अपमान भरा जीवन

मेरा पति जो लम्बा-चौड़ा मर्द था उसे भी मालकिन मारती थी। खुद मांस खाते पर उसे खाने को इमली की चटनी भी नहीं देती थी। ऐसी थी बंधुआ दासों की जिंदगी। वो खुद बढ़िया खाट पर बैठते, हम ज़मीन पर। उनकी उल्टी या टट्टी साफ़ करते। बड़े कष्ट का जीवन था। बड़े अपमान का जीवन था। इसी वजह से हम कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए। सबसे पहले मेरा बड़ा भाई आंदोलन में आया, फिर हम सब।

संघर्ष का जीवन

यह निज़ाम के राज का जमाना था। आंदोलन के कार्यकर्ता गुट बना कर छिप कर घूमते। यहां वहां रास्ता रोक कर निज़ाम के आदमियों को कर वसूली से रोकते थे। मेरा भाई भी उनमें था। निज़ाम के सिपाहियों ने पूरे गांव को आग लगा दी। मेरा बेटा तीन महीने का था। पहले मेरे पति ने और फिर मैंने भी आंदोलन का काम करना शुरू कर दिया। अपने दस महीने के बच्चे को भी मैंने दूर भेज दिया। कुछ दिन बाद मेरा दूध सूख गया। मेरा बच्चा ननद के पास पला।

हमारे ऊपर बार-बार हमले होने लगे। आखिर हमको जंगल में छिपना पड़ा। मैं कम उम्र की थी। मुझे जंगल जाने में डर लगा। सोचा, पता नहीं इतनी मुश्किल जिंदगी जी पाऊंगी या नहीं। आखिर औरत थी। रातों को दौड़ना, जंगलों में छिपना था। अगर पकड़ी गई तो मार दी जाती। फिर भी मैं साथियों के साथ-साथ घूमती रही। तभी मेरे पेट में बच्चा ठहर गया। ऐसे ही दिन निकलते रहे। दर्द हुए तो साथी एक बूढ़ी औरत को ले आए। वहीं झाड़ियों के पीछे मैंने बच्चा जना। मैं पार्टी के लिए काम करते हुए घूमती रही और बच्चे को भी पालती रही।

हमारे नेताओं ने कहा—

"कमलम्मा या तो तुम यह बच्चा किसी के पास रखवा दो या हमें छोड़ दो। बच्चा है, कभी न कभी रोएगा। हम सब पकड़े जाएंगे। पर हां याद रखो अगर तुम पकड़ी गई तो वे लोग तुम्हारे टुकड़े कर देंगे। मिर्ची भर देंगे और तड़पा-तड़पा के मारेंगे।"

मैंने सोचा—"मरना है तो पति के साथ और पार्टी के कामरेड साथियों के साथ मरूंगी। बच्चे को किसी को दे दूंगी।"

बड़ा कठिन फैसला

हम लोग एक गांव में आए। वहां एक आदमी के तीन बेटे मर गए थे। मैंने उसके हाथों में अपना बेटा रखा और फिर मुड़ कर नहीं देखा। आज उस बात को छत्तीस साल हो गए हैं। पता नहीं मेरा बच्चा कहां है, कैसा है? क्या कहूं अपने त्याग के बारे में। सबने कहा तुम्हारा नाम इतिहास में लिखा जाएगा। क्यों बच्चे का दुख करती हो। क्या मां के दिल को इससे शांति मिलती है?

मैं आदिवासियों के बीच काम करती थी। उन्हें विद्रोह के लिए समझाती और तैयार करती थी। बीमारों और घायलों को भी संभालती थी। मैंने हथियार उठा कर हमलों में हिस्सा नहीं लिया। मेरी सहेली वेंकटम्मा मर्दों के कपड़े पहन कर बंदूक लेकर साथियों के साथ मार-धाड़ के लिए भी जाती थी।

एक बार हमारा एक साथी पकड़ा गया। हम लोग अपनी जगह छोड़ कर भागे। पीछे से पुलिस का हमला हुआ। एक साथी को गोली लगी। हम सब दौड़े। बड़ी मुश्किल से उस दिन जान बची।

पार्टी का हुक्म

थोड़े ही दिनों में पार्टी ने तय किया कि आंदोलन रोक दिया जाए। हमसे कहा हम अपने हथियार डाल दें। हमारे साथियों ने कहा इससे तो हमको गोली मार दो। केरल और बंगाल से कम्युनिस्ट नेता आए। सबने कहा आंदोलन बंद कर के घर लौट जाओ। पार्टी ने हमें एक बैल और 120 रुपए दिए। हमारे पास घर-द्वार कुछ नहीं था।

मेरा पति नागी रेड्डी की नक्सलाइट पार्टी में काम करने लगा। उसे जेल हो गई। मैंने बहुत दुख और गरीबी झेली। मैं अब भी पार्टी में हूं। सारे आंध्रप्रदेश में घूम-घूम कर काम करती हूं। वैसे अब बूढ़ी हो रही हूं। अब इतनी शारीरिक ताकत नहीं बची।

वैसे सबसे बड़ी ताकत है इरादों की, विश्वास की। वह मेरे पास है।

(साभार—'वी वर मेकिंग हिस्ट्री' पुस्तक से)